सदाचार

पिता पुत्र को सदाचार का
पाठ पढ़ा रहा था
रामायण से लेकर गीता तक के
सभी किस्से दोहरा रहा था।
झूठ चोरी और व्यसन को,
सिगरेट फूंक-कर,
गलत बता रहा था।

कलयुगी छात्र को
सतयुगी पाठ नहीं भा रहा था।
वह स्वयं को फिल्म के प्रारम्भिक भाग में
खलनायकों के बीच फंसा हीरो पा रहा था
विषय को बदलने के उद्देश्य से
पुत्र ने बस्ते में हाथ डाला।
और उसमें से एक पैंसिल और रजिस्टर निकाला।
जोर-जोर से वर्णन सुनाया।

सुनते ही पिता को गुस्सा आ गया।
किन्तु मासूम चेहरा देख,
हाथ सकपका गया।
फिर पुत्र को समझाया
तू ये सब चुरा कर क्यों लाया।
अरे, अगर तुझे पैंसिल और रजिस्टर की,
इतनी जरुरत थी,
तो मुझसे कहा होता।
मैं अपने आफिस से तेरे लिये
एक नहीं दो-दो ला दिया होता।

अनिल कुमार लोहानी, "वैज्ञानिक "बी", गंगा मैदानी क्षेत्रीय केन्द्र, पटना"